B.A Part I
Paper 1st

पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में अन्तर :-

(Difference between perfect competition & monopolistic competition)

पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में कुछ समानताएँ तथा असमानताएँ हैं—

- (Similarities) समानताएँ – दोनों बाजार स्थितियों में निम्नलिखित समानताएँ पाई जाती हैं;

(i) पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता दोनों में ही के अन्तर्गत फर्मों की बड़ी संख्या होती है।

(ii) दोनों में, फर्में एक दूसरी से प्रतियोगिता रखती हैं।

(iii) दोनों में, फर्मों को आने-जाने की स्वतंत्रता होती है।

(iv) दोनों में, सीमान्त लागत तथा सीमान्त आय की समानता के बिन्दु पर संतुलन स्थापित होता है।

(v) दोनों बाजार स्थितियों में, फर्म अल्पकालीन में सामान्य से अधिक लाभ अथवा हानियाँ उठा सकता है। परन्तु दीर्घकालीन में फर्में केवल सामान्य लाभ अर्जित करती हैं।

- असमानताएँ (~~Dissimi~~ (Dissimilarities) - पर, पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में कुछ असमानताएँ भी होती हैं जिनकी विवेचना यहाँ की जा रही है:

(i) पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत, प्रत्येक फर्म समरूप वस्तु का उत्पादन तथा विक्रय करती है ताकि कोई भी क्रेता दूसरे दूसरे विक्रेताओं की अपेक्षा किसी एक विक्रेता की वस्तु को अधिमान न दे सके। दूसरी ओर, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत वस्तुओं में अन्तर लाया जाता है। वस्तुएँ मिलती-जुलती तो होती हैं पर ठीक एक जैसी नहीं होती वे निकट स्थानापन्न वस्तुएँ होती हैं। उनके डिजाइन, रंग, मल्क, पैकिंग आदि में अन्तर होता है।

(ii) पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत, समस्त उद्योग की माँग तथा पूर्ति की शक्तियाँ

Scanned by CamScanner

कीमत निर्धारित करती हैं। प्रत्येक फर्म को उस कीमत पर अपनी वस्तु बेचनी पड़ती है। वह अपने एक मात्र कार्य से कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती। उसे अपना उत्पादन उस कीमत पर समायोजित करना पड़ता है। इस प्रकार प्रत्येक फर्म कीमत स्वीकार करती है और मात्रा को समायोजित करती है। दूसरी ओर एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत, प्रत्येक फर्म ~~कीमत स्वीकार करती है और मात्रा को समायोजित करती~~ अपनी कीमत-नीति होती है। वह एक समूह में वस्तु के कुल उत्पादन के थोड़े हिस्से से अधिक पर नियंत्रण नहीं रख सकती।

iii) ज्यामितीय रूप से, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म का माँग वक्र (AR) पूर्ण लोचदार होता है और सीमान्त आय वक्र (MR) इसके बराबर होता है। इसके मुकाबले, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्ग फर्म का माँग वक्र लोचदार एवं नीचे की ओर ढालू होता है तथा इसके अनुरूप (MR) वक्र इसके नीचे स्थिर रहता है। इसका मतलब है कि फर्म को अपनी प्रतियोगी फर्मों को आकर्षित कर अपना विक्रय बढ़ाने के लिए अपनी वस्तु की कीमत घटानी पड़ेगी, बशर्ते कि प्रतियोगी फर्में अपनी कीमतें न घटाएँ।

iv) यद्यपि दोनों बाजार स्थितियों की संतुलन स्थितियाँ एक जैसी हैं, फिर भी दोनों के बीच कीमत-सीमान्त लागत संबंध में अन्तर रहते हैं। जब पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत MC = MR, तो कीमत भी उनके बराबर होती है क्योंकि कीमत (AR) = MR ऐसा इसलिए होता है कि AR वक्र x-अक्ष के क्षैतिज होता है। क्योंकि AR वक्र नीचे की ओर बाएँ को ढालू होता है, इसलिए एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत MR वक्र इसके नीचे रहता है। इसलिए कीमत (AR) > MR = MC।

v) दोनों बाजार स्थितियों में ~~अन्तिम~~ अंतर ~~यह है~~ कि उनके आकार से संबंध रखता है। दीर्घकालीन में, एक ओर, प्रतियोगी फर्मों का आकार इष्टतम होता है और वे अपनी पूर्ण क्षमता पर उत्पादन करती हैं क्योंकि अपने न्यूनतम पर कीमत (AR) = LMC = LAC। परन्तु एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत, फर्मों का आकार इष्टतम से कम होता है और उनमें अतिरिक्त क्षमता रहती है क्योंकि AR वक्र नीचे की ओर ढालू है और अपने न्यूनतम बिन्दु पर LAC वक्र स्पर्श नहीं कर सकता। फर्म की संतुलन शर्त है: कीमत (AR) = LAC > LMC = MR

Scanned by CamScanner

vi) पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में एक और अन्तर विक्रय लागतों से संबंध रखता है। पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत, जहाँ वस्तु समरूप होती है विक्रय की कोई समस्या नहीं होती। फर्म, चालू बाजार कीमत पर, अपनी वस्तु की चाहे जितनी मात्रा बेच सकती है परन्तु एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत, जहाँ विभेदीकृत वस्तुएँ होती हैं, विक्रय बढ़ाने के लिए विक्रय लागतें भी उठानी पड़ती हैं। ये लागतें इसलिए उठाई जाती हैं कि क्रेता को एक वस्तु के अधिमान में दूसरी वस्तु खरीदने को प्रेरित किया जा सके।

vii) दोनों बाजार स्थितियों में अन्तिम अंतर यह है कि पूर्ण प्रतियोगिता की अपेक्षा एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म का उत्पा उत्पादन कम और कीमत अधिक होती है। इसे ~~चित्र~~ चित्र (1) में दिखाया गया है जहाँ d तथा MR_1 एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत स फर्म के औसत तथा सीमान्त आय वक्र हैं और AR = MR, प्रतियोगी फर्म के। LMC तथा LAC वक्र दोनों फर्मों के लिए समान मान लिए गए हैं। एकाधिकारात्मक प्रतियोगी फर्म का संतुलन E_1 बिन्दु पर और पूर्ण प्रतियोगी का संतुलन E बिन्दु पर स्थापित होता है। एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म OQ_1 उत्पादन विक्रय करती है जो कि प्रतियोगी फर्म के उत्पादन के विक्रय OQ से कम है, जबकि इसकी Q_1A_1 कीमत, प्रतियोगी फर्म की कीमत QE से अधिक है।

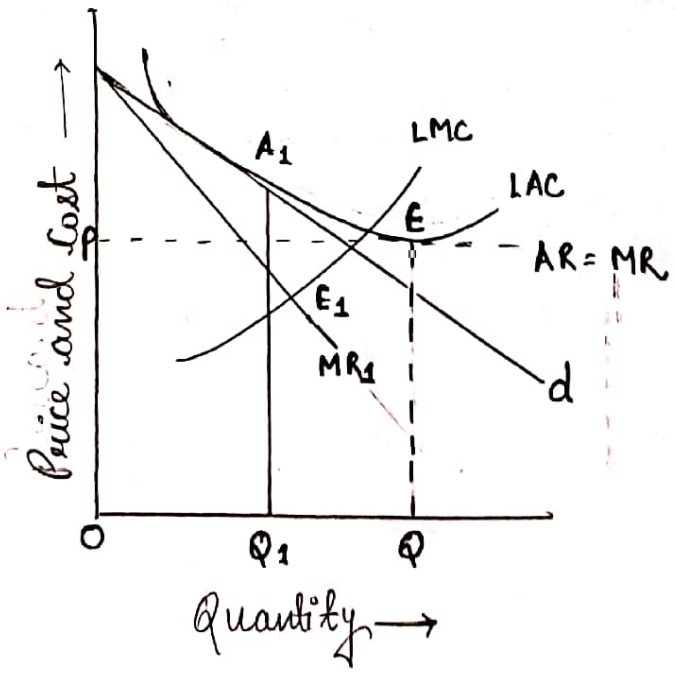

(चित्र-1)

Scanned by CamScanner